10

आतम अनुभव आवै

आतम अनुभव आवै...

आतम अनुभव आवै जब निज आतम अनुभव आवै,
और कछु न सुहावै जब निज आतम अनुभव आवै ॥ टेक॥

रस नीरस हो जात तत्-च्छिन, अक्ष विषय नहि भावै ॥ १॥

जब निज आतम अनुभव आवै...

गोष्ठी कथा कुतुहल विघटे, पुगल प्रीति नसावै ॥२॥

जब निज आतम अनुभव आवै...

राग-द्वेष जुग चपल पक्षजुत, मन पक्षी मर जावै ॥३॥

जब निज आतम अनुभव आवै...

ज्ञानानन्द सुधारस उमगे, घट अन्तर न समावै ॥४॥

जब निज आतम अनुभव आवै...

'भागचन्द' ऐसे अनुभव के हाथ जोरि सिर नावे ॥५॥

जब निज आतम अनुभव आवै...

जब अपनी आत्मा का अनुभव होता है तब कहीं और मन नहीं लगता॥ टेक॥

संसार के बाहर के सभी रस आत्मा के अनुभव के बाद रस विहीन हो जाते हैं और इंद्रियों के विषय भोग भी मन को नहीं भाते॥ १॥

जब अपने चैतन्य का अनुभव होता है तब गोष्ठी, कथा आदि सांसारिक चर्चाओं में जिज्ञासा समाप्त हो जाती है और पुद्गल के प्रति ममत्व परिणाम नष्ट हो जाता है॥ २॥

अपनी आत्मा का अनुभव हो जाने पर राग और द्वेष रूपी पक्षपात वाले परिणाम और मन की वासनाए समाप्त हो जाती हैं॥ ३॥

जब अपनी आत्मा का अनुभव होता है तब अंतर में ज्ञान और आनंद रूपी अमृत रस का जन्म होता है और मानो आत्मा का अपार आनंद अंतर में नहीं समाता॥ ४॥

कविवर भागचंद जी कहते हैं कि मैं ऐसे आत्मा के अनुभव को हाथ जोड़कर और सिर झुकाकर नमस्कार करता हूँ॥ ५॥